कोलाहल

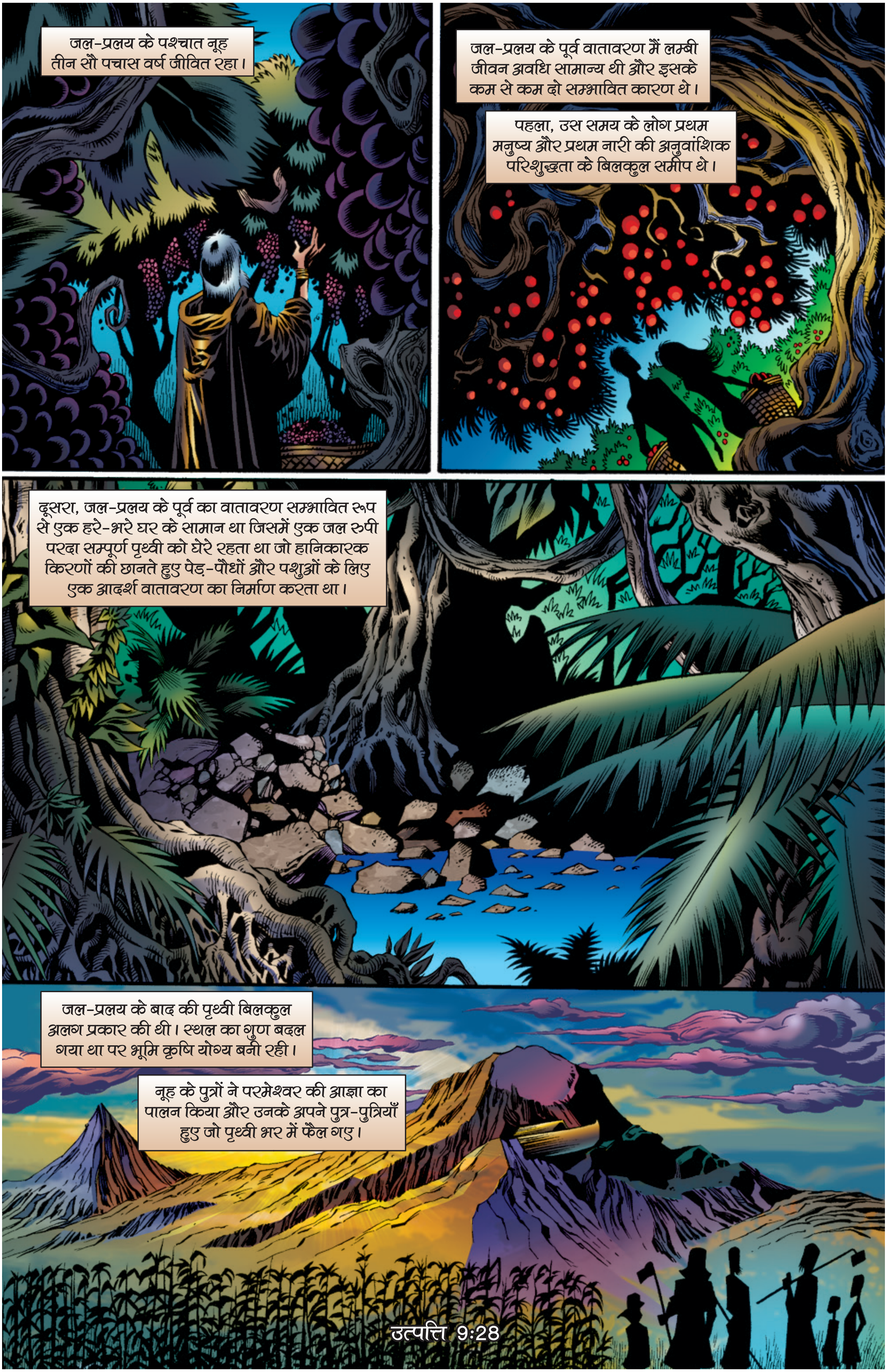
जल-प्रलय के पश्चात नूह तीन सौ पचास वर्ष जीवित रहा।
जल-प्रलय के पूर्व वातावरण में लम्बी जीवन अवधि सामान्य थी और इसके कम से कम दो सम्भावित कारण थे।
पहला, उस समय के लोग प्रथम मनुष्य और प्रथम नारी की अनुवांशिक परिशुद्धता के बिलकुल समीप थे।
दूसरा, जल-प्रलय के पूर्व का वातावरण सम्भावित रूप से एक हरे-भरे घर के सामान था जिसमें एक जल रुपी परदा सम्पूर्ण पृथ्वी को घेरे रहता था जो हानिकारक किरणों की छानते हुए पेड़-पौधों और पशुओं के लिए एक आदर्श वातावरण का निर्माण करता था।
जल-प्रलय के बाद की पृथ्वी बिलकुल अलग प्रकार की थी। स्थल का गुण बदल गया था पर भूमि कृषि योग्य बनी रही।
नूह के पुत्रों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और उनके अपने पुत्र-पुत्रियाँ हुए जो पृथ्वी भर में फैल गए।
उत्पत्ति 9:28

निम्रोद नूह के परपोतों में से एक था जो पृथ्वी पर पहला एक शक्तिशाली शूरवीर हुआ।
इस समय तक पृथ्वी पर सारी मानव जाति की एक ही भाषा और एक ही बोली थी।
परन्तु परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करते हुए कि सारी पृथ्वी पर फैल जाओ के स्थान पर उन लोगों ने एक उपजाऊ स्थान पर जो शिनार या बेबीलोन कहलाता है, वहाँ रुकना अच्छा समझा।
आओ हम इस जगह एक नगर और एक मिनार बना ले जिस की चोटी आकाश से बाते करे, इस प्रकार से हम अपना नक् करे ऐसा न हो कि हमें साड़ी पृथ्वी पर फैलना पड़े।
महान निम्रोद हमारी अगुवाई करेगा।
वहाँ ऐसे सामान बहुतायत से है जिनसे नगर को बनाया जा सकें।
आओ हम ईटें बनाकर आग में उन्हें अच्छी तरह पकाएँ।
हम पत्थर के स्थान में ईटों का और चूने के स्थान पर में मिट्टी के गारे का प्रयोग कर एक मिनार बनाएँ।
उत्पत्ति 10:8-11:4

हमें खुद पर ही शासन करने के लिए किसी परमेश्वर की ज़रूरत नहीं और न ही हमें हमारे परदादा नूह के नियमों की ज़रूरत है।
यह बड़ा नगर समस्त पृथ्वी भर के लोगों का केन्द्र होगा और सारी जातियों के लोग यहाँ आराधना के लिए आएँगें।
और निम्रोद हम पर शासन करेगा।
निम्रोद हमारा शासक और हमारा महायाजक होगा।
महान निम्रोद।
वह एक देवता है।
इस प्रकार आराधना के इस नये केन्द्र का निर्माण कार्य शुरू हो गया।
उन्होंने आकाश छूने वाली एक बड़ी मिनार का निर्माण शुरू किया।
सम्भवतः वह एक बड़े गुम्मट की संरचना थी जहाँ वे लोग तारे और नक्षत्रों की आराधना कर सकते थे और ऐसी वास्तुओं की सृष्टि करते थे जो सृष्टिकरता से अलग थी।
उत्पत्ति 11:4

और उस नगर और गुम्मट को देखने जिसे मनुष्यों ने बनाया था परमेश्वर उतर आया।

उत्पत्ति 11:5

एक दल के रूप में इन्होंने इसे प्रारम्भ किया है, और अगर ऐसा ही होता रहा तो इनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं होगा।
आओ, हम उनकी भाषा मैं गड़बड़ी डाल दें की वे एक दूसरे की बोली को न समझ सके।
दूसरों को परमेश्वर के सितारों को देखने के लिए जगह बनाने।
बेवकूफ, हो बोल क्या ?
क्या कह रहो समझ नहीं आ रहा !
ये विचित्र बोली बोलना छोड़ो और मेरी नज़रों से दूर हो जाओ !
क्या हो रहा है ? क्या तुम मुझे नहीं समझ रहे ?
जो लोग नई-नई भाषाएँ बोल रहे थे केवल उन्हीं की भाषा समझ रहे थे जो उनके जैसी भाषा ही बोल रहे थे।
इसके परिणामस्वरूप, मिनार बनाने का काम रुक गया और जैसा परमेश्वर चाहता था - लोग सारी पृथ्वी के पर फैल गए।
उत्पत्ति 11:6-8